Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 4, July-2021, ISSN 2230-7540

गोंड जनजाति के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन

Ajay Sahu[1]*, Dr. Waseem Ahmad Ansari[2]

[1] Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

[2] Professor , Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

सार - *एक संचार के रूप में मास मीडिया के लिखित, मौखिक और प्रसारण जैसे विभिन्न रूप हैं जो बड़ी संख्या में जनता तक पहुंचते हैं। जनसंचार माध्यमों के सबसे सामान्य मंचों की गणना टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्र, इंटरनेट आदि के रूप में की जा सकती है। 'मीडिया' शब्द का प्रयोग अधिकांशतः टेलीविजन, रेडियो और समाचार पत्रों जैसे संचारी उपकरणों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। कुल 200 उत्तरदाताओं का नमूना, प्रत्येक जिले से 100 नमूने, अर्थात मध्य प्रदेश के शहडोल जिले की सुहागपुर तहसील से 25 उत्तरदाताओं का एक नमूना एकत्र किया, एक गोंड परिवार को अनुसंधान के लिए मूल नमूना इकाई मानते हुए. शोध में उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत विशेषताएं और जनसांख्यिकीय जानकारी बहुत आवश्यक हैं और अध्ययन की आवश्यकता के अनुसार विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रस्तुत शोध में 200 उत्तरदाताओं के विभिन्न व्यक्तिगत गुण एवं किसी विशेष उत्तर के प्रति उनकी प्रतिक्रिया को प्रस्तुत किया गया है। मीडिया ने निस्संदेह समाज की तस्वीर बदल दी है। अब, लोग दूर-दराज के क्षेत्रों में भी एक दूसरे से अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं। संचार के मामले में उनकी पहुंच नाटकीय रूप से बढ़ी है और अभी भी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। अब, अनपढ़ लोगों के पास भी रेडियो, टेलीविजन और स्मार्ट फोन आदि जैसे मीडिया प्लेटफॉर्म तक पहुंच है।*

खोजशब्द -: *जनसंचार, टेलीविजन*

----------X----------

परिचय

संचार के रूप में जनसंचार माध्यमों के लिखित, मौखिक और प्रसारण जैसे विभिन्न रूप होते हैं जो बड़ी संख्या में जनसमूह तक पहुँचते हैं। जनसंचार माध्यमों के सबसे सामान्य मंचों को टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्र, इंटरनेट आदि के रूप में गिना जा सकता है। मीडिया शब्द का प्रयोग ज्यादातर संचार उपकरण जैसे टेलीविजन, रेडियो और समाचार पत्रों के संदर्भ में किया जाता है। बियागी (2015) ने मास मीडिया उद्योग को आठ भागों में वर्गीकृत किया: टेलीविजन, समाचार पत्र, रेडियो पत्रिकाएं, किताबें, रिकॉर्डिंग, फिल्में और इंटरनेट। मास मीडिया विकसित और अविकसित समाज दोनों में एक शक्तिशाली परिवर्तनशील शक्ति है। वर्तमान युग मीडिया और तकनीक का युग है। टेलीविजन, रेडियो और इंटरनेट के हालिया विस्तार के बड़े पैमाने पर आकर्षक दृष्टिकोण के कारण मास मीडिया व्यापक रूप से पूरे देश में फैल गया है। इसलिए मानव जीवन पूरी तरह से मीडिया के संदेशों से भरा हुआ है। लोग सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के लिए पूरी तरह से जनसंचार माध्यमों पर निर्भर हैं। लेकिन यह पहले की तरह सुविधाजनक नहीं था जैसा अब है। मास मीडिया का एक लंबा इतिहास है जिसके माध्यम से यह विकसित और विकसित हुआ है। इसके अलावा, दुनिया के विभिन्न समाजों में मीडिया के उद्भव और विस्तार में अंतर है। (डॉ. निशा मुदे-पवार (2013)) चूंकि मीडिया हमारे समाज का एक अभिन्न अंग है, यह लोगों की उपभोग की आदतों, वास्तविकता की धारणा, सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन और सत्ता की राजनीति को प्रभावित करता है।

भारत सबसे बड़ा लोकतंत्र है और अभी भी एक विकासशील देश है। विकसित और विकासशील देशों की सरकारें ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में भूख, गरीबी और निरक्षरता को कम करने के लिए कड़ी मेहनत कर रही हैं। इसलिए भारत जैसे विकासशील देश में मास मीडिया के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने मीडिया को

www.ignited.in

'लोकतंत्र का प्रहरी' कहा था। मीडिया का यह कार्य एक लोकतांत्रिक समाज में बहुत आवश्यक है, जहाँ इसके नागरिकों को सरकार के कामकाज के बारे में पता होना चाहिए। स्वतंत्रता के बाद, वर्षों की गुलामी और शोषण के कारण भारतीय जनता पर थोपी गई चुनौतियों का सामना करने के लिए; मास मीडिया को आत्मनिर्भरता, शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समानता और न्याय की भावना का प्रसार करना था और इस प्रकार राष्ट्र को विकास के मार्ग पर ले जाना था। विभिन्न क्रमिक सरकारों द्वारा शुरू की गई पंचवर्षीय योजना में इस पर समान रूप से जोर दिया गया था क्योंकि सत्ता में बैठे लोग सामाजिक परिवर्तन लाने में मीडिया की भूमिका से अवगत थे। इसके बाद, भारत सरकार ने मीडिया के प्रकाश को फैलाने और लोगों को विकास की प्रक्रिया में विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में जोड़ने के लिए कई पहल की हैं। इस संबंध में, कई उन्नत देशों को राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक विकास के लक्ष्य को साकार करने के लिए मीडिया के जन आधार का विस्तार करने के लिए सर्वोत्तम मॉडल के रूप में लिया गया था। यह एक सर्वमान्य सत्य है कि मीडिया लोगों के मन और जीवन पर बहुत मजबूत और गहरा प्रभाव डाल सकता है। वस्तुतः समाज का प्रत्येक वर्ग विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक और धार्मिक मुद्दों के आधार पर एक निश्चित सीमा तक जनसंचार माध्यमों से प्रभावित और प्रभावित होता है। जब तक इस अंतर को पाटना नहीं है; सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए मीडिया का पूरी तरह से उपयोग नहीं किया जा सकता है। भारत सहित दुनिया भर में मास मीडिया दिन-ब-दिन विकसित हो रहा है। वर्तमान शताब्दी में शायद ही कोई देश ऐसा हो जो जनसंचार माध्यमों का उपयोग जनसाधारण के बीच सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास लाने की दृष्टि से न कर रहा हो। जनसंचार माध्यम दुनिया में दूर-दराज के स्थानों तक पहुँचने वाले उपग्रहों के माध्यम से प्रसारण के माध्यम से जनता को सूचित करता है।

मीडिया के प्रभाव का अध्ययन मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, नृविज्ञान, संचार, शिक्षा और प्रबंधन आदि जैसे विभिन्न विषयों के विद्वानों द्वारा किया गया है। मीडिया का प्रभाव मुख्य रूप से समाज में मीडिया के प्रसार पर निर्भर करता है। मीडिया उन लोगों के बीच व्यापक रूप से फैल गया है जो शिक्षित, सामाजिक और आर्थिक रूप से संपन्न हैं और भौगोलिक रूप से बाहरी दुनिया से जुड़े हुए हैं। नतीजतन, इन लोगों को मीडिया से काफी हद तक फायदा होता है। लेकिन यह भारतीय परिदृश्य में बहुत जटिल हो जाता है जहां जाति, पंथ, धर्म और इलाके आदि के आधार पर जनता के बीच असमानता मौजूद है। मोहंती और परी (2011) लिखते हैं कि भारत में बहुत जटिल होने के कारण मीडिया की पूरी तरह से अपर्याप्त पहुंच है। देश में असंख्य सामाजिक वर्गों, जनजातियों, जातियों और पंथों वाली सामाजिक व्यवस्था। स्पष्ट करने के लिए, भारत में देश की 68.84% जनसंख्या, एक अरब से अधिक लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं जबकि केवल 31.16% शहरी क्षेत्र में रहते हैं। इसलिए, अक्सर यह सवाल पूछा जाता है कि कैसे इन हाशिए के समुदायों को उनके वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रभावी ढंग से सूचित और शिक्षित किया जा सकता है। इन लोगों की जरूरतों और आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए संदेश प्रसारित करने का सबसे अच्छा माध्यम सही ढंग से उपयोग किया जाना चाहिए। उपर्युक्त कारण है कि रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट आदि जैसे जनसंचार माध्यमों को ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों के विकास के लिए प्रभावी मीडिया माना जाता है। रेडियो और टेलीविजन दोनों की वृद्धि में अभूतपूर्व भूमिका है क्योंकि एक ध्वनि के रंगमंच के रूप में योगदान करने का प्रयास करता है और दूसरा दृश्य छवियों के रंगमंच के रूप में। विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक माध्यम होने के बावजूद दोनों भारत भर में सभी और विविध के लिए सेवा करते हैं। इस प्रकार भारतीय सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए, हमारे नीति निर्माता जनसंचार माध्यमों के बेहतर माध्यमों के माध्यम से ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में बहुमूल्य जानकारी, नए निष्कर्ष, कृषि, स्वास्थ्य, पशुपालन आदि के बारे में निर्णयों को स्थानांतरित करने में विश्वास करते हैं। इसके अलावा, यह विशेष रूप से अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के साथ एक स्टीयरिंग व्हील के रूप में साबित हुआ है जिसे नब्बे के दशक के उत्तरार्ध में पूर्व प्रधान मंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने तैयार किया था, जिसने मीडिया प्रौद्योगिकी में विस्फोट देखा था। हाल के दिनों में जनसंचार माध्यमों का विस्तार ज्ञान और सूचना के प्रसार में चमत्कार साबित हुआ है। यह एक महान उपकरण है जिसके माध्यम से हाशिए के समुदायों को सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है।

गोंड :एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

गोंडी)गोंडी(, जिसे कभी-कभी गोंड या कोइतूर के नाम से जाना जाता है, एक द्रविड़ जातीय समूह है। वे भारत के सबसे शक्तिशाली संगठनों में से एक हैं। मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, बिहार

www.ignited.in

और ओडिशा उन राज्यों में से हैं जहां वे पाए जा सकते हैं। भारत की आरक्षण प्रणाली के प्रयोजनों के लिए, उन्हें अनुसूचित जनजाति के रूप में वर्गीकृत किया गया है। तेलुगु और गोंडी संबंधित भाषाएं हैं। 2011 की भारतीय जनगणना में लगभग 2.98 मिलियन गोंडी बोलने वालों का दस्तावेजीकरण किया गया था, ज्यादातर दक्षिणपूर्वी मध्य प्रदेश, पूर्वी महाराष्ट्र, दक्षिणी छत्तीसगढ़ और उत्तरी तेलंगाना में। दूसरी ओर, अधिकांश गोंड हिंदी, उड़िया और मराठी जैसी क्षेत्रीय भाषाएँ बोलते हैं। जनगणना के अनुसार 1971 में इनकी जनसंख्या 5.01 मिलियन थी। 1991 की जनगणना तक, जनसंख्या बढ़कर 9.3 मिलियन हो गई थी, और 2001 की जनगणना तक, यह लगभग 11 मिलियन हो गई थी। वे दशकों से भारत के मध्य क्षेत्र में नक्सली-माओवादी विद्रोह के गवाह रहे हैं। नक्सली विद्रोह से निपटने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार के अनुरोध पर स्थापित एक सशस्त्र उग्रवादी संगठन सलवा जुडूम को 5 जुलाई, 2011 को सुप्रीम कोर्ट के फैसले से भंग कर दिया गया था। मध्य प्रदेश में गोंड जनजाति बहुमत में पाई जाती है।)नज़र, एम.आर., और हसबुल्लाह, ए.एच) .2010)(भारत में भी गोंड की आबादी बहुसंख्यक है। गोंड जनजाति को सांस्कृतिक रूप से बहुत समृद्ध माना जाता है और जब हम इसकी तुलना अन्य जनजाति से करते हैं तो यह अधिक संगठित और प्रभावी होती है। गोंड शब्द तेलगु शब्द "कोडे "से बना है जिसका अर्थ है पहाड़। गोंड जनजाति पर्वतीय क्षेत्रों में रहना पसंद करती है इसलिए उन्हें यह नाम दिया गया है। गोंड जनजाति आम तौर पर मध्य प्रदेश में नर्मदा नदी के दोनों किनारों पर पाई जाती है, लेकिन यह कुछ अन्य जिलों जैसे बैतूल, होशंगाबाद, छिंदवाड़ा, बालाघाट, शहडोल, मंडला, सागर, दमोह आदि में भी पाई जाती है।

गोंड :एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

गोंडी (गोंडी), जिसे कभी-कभी गोंड या कोइतूर के नाम से जाना जाता है, एक द्रविड़ जातीय समूह है। वे भारत के सबसे शक्तिशाली संगठनों में से एक हैं। मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, और ओडिशा उन राज्यों में से हैं जहां वे पाए जा सकते हैं। भारत की आरक्षण प्रणाली के प्रयोजनों के लिए, उन्हें अनुसूचित जनजाति के रूप में वर्गीकृत किया गया है। तेलुगु और गोंडी संबंधित भाषाएं हैं। 2011 की भारतीय जनगणना में लगभग 2.98 मिलियन गोंडी बोलने वालों का दस्तावेजीकरण किया गया था, ज्यादातर दक्षिणपूर्वी मध्य प्रदेश, पूर्वी महाराष्ट्र, दक्षिणी छत्तीसगढ़ और उत्तरी तेलंगाना में। दूसरी ओर, अधिकांश गोंड हिंदी, उड़िया और मराठी जैसी क्षेत्रीय भाषाएँ बोलते हैं। जनगणना के अनुसार 1971 में इनकी जनसंख्या 5.01 मिलियन थी। 1991 की जनगणना तक, जनसंख्या बढ़कर 9.3 मिलियन हो गई थी, और 2001 की जनगणना तक, यह लगभग 11 मिलियन हो गई थी। वे दशकों से भारत के मध्य क्षेत्र में नक्सली-माओवादी विद्रोह के गवाह रहे हैं। नक्सली विद्रोह से निपटने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार के अनुरोध पर स्थापित एक सशस्त्र उग्रवादी संगठन सलवा जुडूम को 5 जुलाई, 2011 सुप्रीम कोर्ट के फैसले से भंग कर दिया गया था। मध्य प्रदेश में गोंड जनजाति बहुमत में पाई जाती है। भारत में भी गोंड की आबादी बहुसंख्यक है। गोंड जनजाति को सांस्कृतिक रूप से बहुत समृद्ध माना जाता है और जब हम इसकी तुलना अन्य जनजाति से करते हैं तो यह अधिक संगठित और प्रभावी होती है। गोंड शब्द तेलगु शब्द "कोडे" से बना है जिसका अर्थ है पहाड़। (कौंडल, वी. (2012)) गोंड जनजाति पर्वतीय क्षेत्रों में रहना पसंद करती है इसलिए उन्हें यह नाम दिया गया है। गोंड जनजाति आम तौर पर मध्य प्रदेश में नर्मदा नदी के दोनों किनारों पर पाई जाती है, लेकिन यह कुछ अन्य जिलों जैसे बैतूल, होशंगाबाद, छिंदवाड़ा, बालाघाट, शहडोल, मंडला, सागर, दमोह आदि में भी पाई जाती है।

3. साहित्य की समीक्षा

श्वेता दुबे (2013)हेमोग्लोबिनोपैथी हीमोग्लोबिन का विकार है और दुनिया में सबसे आम जीन विकार है। डब्ल्यूएचओ 2001 की रिपोर्ट का अनुमान है कि लगभग 250 मिलियन लोग इन विकारों के लिए विषमयुग्मजी हैं और 2000 प्रभावित होमोज्यगस प्रतिवर्ष पैदा होते हैं जो सिकल सेल रोगों और थैलेसीमिया के बीच समान रूप से वितरित होते हैं। भारत में हीमोग्लोबिनोपैथी का मुख्य रूप सिकल सेल एनीमिया, थैलेसीमिया, हीमोग्लोबिन ई और हीमोग्लोबिन डी है। थैलेसीमिया में, थैलेसीमिया भारत के लगभग सभी जनसंख्या समूह में बहुत आम है। अल्फा थैलेसीमिया की भारत में कम जांच की जाती है जो मुख्य रूप से बिंदु उत्परिवर्तन के कारण होता है, लेकिन कुछ अध्ययनों ने भारतीय उपमहाद्वीप की आदिवासी आबादी में αथैलेसीमिया टाइप II के प्रसार का सुझाव दिया। मध्य भारत में मध्य प्रदेश के शहडोल जिले के गोंड जनजाति के लगभग 75 व्यक्तियों की असामान्य सीबीसी प्रोफाइल, हीमोग्लोबिनोपैथी, αथैलेसीमिया और थैलेसीमिया के लिए जांच की गई। अध्ययन के लिए इस्तेमाल की जाने वाली विधि पोलीमरेज़ चेन रिएक्शन है। 17% की व्यापकता दर के साथ जनजाति में सिकल सेल एनीमिया एकमात्र असामान्य हीमोग्लोबिनोपैथी है। थैलेसीमिया भी 4% की व्यापकता दर के साथ कम था। αथैलेसीमिया टाइप II

www.ignited.in

बहुत आम था यानी 43% ज्यादातर दाहिने वार्ड को हटाने के साथ, यानी α3.7 kb विलोपन। अल्फा थैलेसीमिया टाइप II की हेटेरोज़ायोसिटी ने हेमेटोलॉजिकल पैरामीटर को थोड़ा कम कर दिया। 62% आबादी में से अधिकांश एनीमिक थी जो वयस्कों में महिलाओं और बच्चों में अधिक स्पष्ट थी, अधिकांश लोग हल्के से एनीमिक थे, लेकिन वयस्क महिलाओं और बच्चों का एक बड़ा अनुपात मध्यम से गंभीर रूप से एनीमिक था।

सूरी (2014)जम्मू और कश्मीर के गोंड और बकरवाल जातीय समुदायों की चक्रीय खानाबदोश आदतों पर सशस्त्र संघर्षों के प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन में यादृच्छिक प्रतिचयन का प्रयोग किया गया तथा साक्षात्कारों, केस अध्ययनों तथा प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़ों का संग्रहण किया गया। अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि जम्मू और कश्मीर क्षेत्र में सशस्त्र संघर्ष से गोंड और बकरवाल की प्रवासी प्रथाएं प्रभावित हुईं। आतंकवादियों के डर से गोंड और बकरवाल मैदानी इलाकों में बसना और अपने प्रवासी मार्गों से बचना पसंद करते हैं। इससे उन्हें इन क्षेत्रों में चारे और चारागाह की भी समस्या का सामना करना पड़ता है। अध्ययन गोंडों के लिए संचार के बेहतर और मजबूत साधनों के लिए भी सुझाव देता है।

गुल और गनई (2016)अध्ययन ने जम्मू और कश्मीर की अनुसूचित जनजातियों के बीच शिक्षा की स्थिति का पता लगाया। पेपर ने निष्कर्ष निकाला कि ढाई दशकों के बाद भी, चूंकि उन्हें संवैधानिक संरक्षण प्रदान किया गया है और उनके विकास के लिए विभिन्न प्रावधान और नीतियां शुरू की गई हैं, उनकी शिक्षा की स्थिति जम्मू और कश्मीर की कुल साक्षरता प्रतिशत और आदिवासी साक्षरता की तुलना में बहुत कम है। राष्ट्रीय स्तर। अध्ययन ने सुझाव दिया कि जम्मू और कश्मीर के जनजातीय क्षेत्र में विकास की गति को बढ़ाने के लिए सरकार और नागरिक समाज द्वारा लगभग 33 ठोस प्रयास करने की तत्काल आवश्यकता है।

साहनी (2015)19वीं शताब्दी में हिमाचल प्रदेश में गोंड समुदाय के प्रवास और बसने के पैटर्न के बारे में एक ऐतिहासिक अध्ययन किया। पेपर ने निष्कर्ष निकाला कि हिमाचल प्रदेश में गोंड का प्रवास और बसना मुख्य रूप से विकास के तरीके और उनकी आजीविका के पैटर्न पर निर्भर करता है। एक पशुपालक समुदाय होने के कारण, गोंड राज्य के उपलब्ध घास के मैदानों से जुड़ा हुआ था। यह प्रमुख कारण था कि गोंड चरागाहों की उपलब्धता और पहुंच के कारण जंगलों से निकटता से जुड़े क्षेत्रों में बस गए थे।

कौंडल (2012) जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के गोंडों में गरीबी की सीमा का अध्ययन किया। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन ने हिमाचल और जम्मू कश्मीर दोनों के गोंडों में गरीबी की समस्या पर प्रकाश डाला। गोंड समुदाय की बड़ी आबादी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है। अध्ययन में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि गोंड में शिक्षा, स्वास्थ्य, शुद्ध पेयजल जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। ज्यादातर गोंड अपने संवैधानिक अधिकारों और उनके उत्थान के लिए बनाई गई विभिन्न नीतियों के बारे में नहीं जानते हैं। पेपर ने निष्कर्ष निकाला कि गोंड समुदाय के बीच प्राथमिक आवश्यकता शिक्षा है जो गोंड के बीच गरीबी उन्मूलन के लिए एक शक्तिशाली वाहन हो सकती है।

सोफी (2013) जम्मू और कश्मीर की गोंड जनजाति के बीच विकास के मुद्दे का अध्ययन किया; यह अध्ययन अनुसंधानकर्ता द्वारा एकत्रित प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों पर आधारित है। गोंड जनजाति के विकास के लिए विभिन्न नीतियां और योजनाएं हैं। अध्ययन गोंड के लिए विभिन्न योजनाओं के कार्यान्वयन में विरोधाभास के बारे में बात करता है। अध्ययन में पाया गया कि गोंडों के कल्याण के लिए राज्य और केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई विभिन्न योजनाएं और नीतियां हैं। लेकिन, इन नीतियों और योजनाओं के बावजूद, गोंड पीड़ित हैं और दयनीय परिस्थितियों में रहते हैं.

शर्मा (2016)उत्तर पूर्व भारत के आदिवासी लोगों के विशेष संदर्भ में आदिवासी युवाओं पर सोशल मीडिया के प्रभाव और आदिवासी लोगों के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर इसके प्रभाव का अध्ययन किया। वर्तमान अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला है कि सोशल मीडिया ने उत्तर पूर्व के आदिवासी युवाओं के विकास के लिए नए रास्ते खोले हैं। उत्तर पूर्व के आदिवासी लोगों के दैनिक जीवन पर सोशल मीडिया का बहुत प्रभाव है। अध्ययन ने यह भी सुझाव दिया कि उत्तर पूर्वी युवाओं को आदिवासी युवाओं के विकास में डिजिटल दुनिया की विशाल क्षमता को स्वीकार करना चाहिए क्योंकि सोशल मीडिया उत्तर पूर्व भारत के आदिवासी युवाओं के लिए अपनी प्रतिभा दिखाने का एक शक्तिशाली मंच बन गया है।

शर्मा (2017)ने जम्मू-कश्मीर के सांबा जिले के विजयपुर ब्लॉक के गोंड बच्चों की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन किया। अध्ययन ने जम्मू के गोंड और बकरवाल जनजाति के बीच साक्षरता और शिक्षा की वर्तमान स्थिति को

www.ignited.in

मापने का एक गंभीर प्रयास किया। शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन के लिए गांव का चयन करने के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूना तकनीक का इस्तेमाल किया। आगे के आंकड़े प्रश्नावली, साक्षात्कार और केस स्टडी के माध्यम से एकत्र किए गए थे। अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि गोंड समुदाय की शैक्षिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। अध्ययन से यह भी पता चला कि गोंड बच्चों के माता-पिता को उन्हें प्रदान की जाने वाली सरकारी सुविधाओं के बारे में कोई जानकारी नहीं है और वे अपने जीवन में शिक्षा के महत्व से पूरी तरह से बेखबर हैं।

नज़री और हसबुल्लाह (2010) कृषि विकास के संदर्भ में ग्रामीण लोगों को शिक्षित करने में रेडियो के प्रभाव का पता लगाया। अध्ययन के परिणामों ने संकेत दिया कि अधिकांश उत्तरदाताओं का मानना था कि भाषा और विशेष क्षेत्र की संस्कृति में कृषि से संबंधित उपयुक्त कार्यक्रमों का निर्माण जनता को शिक्षित करने के लिए बहुत प्रभावी हो सकता है। अध्ययन के निष्कर्षों ने यह भी संकेत दिया कि रेडियो के माध्यम से शैक्षिक हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप ज्ञान में काफी वृद्धि हुई है। अध्ययन ने रेडियो कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों के बीच ज्ञान के स्तर में वृद्धि का भी संकेत दिया। अध्ययन के परिणामों ने स्पष्ट रूप से कृषक समुदायों के बीच जागरूकता बढ़ाने में रेडियो की उपयोगी भूमिका का खुलासा किया। अध्ययन से पता चलता है कि किसान समुदायों के बीच विभिन्न वैज्ञानिक तकनीकों के विकास और वृद्धि का रेडियो सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है। किसानों के विकास और सशक्तिकरण के लिए कृषि संबंधी गतिविधियों पर अधिक से अधिक कार्यक्रम होने चाहिए।

बंसल (2015)भारत के ग्रामीण विकास पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन मुख्य रूप से ग्रामीण भारत में सोशल मीडिया और विकासात्मक मुद्दों के बीच संबंधों पर केंद्रित है। ग्रामीण क्षेत्रों में सोशल मीडिया के दायरे का पता लगाने के लिए, शोधकर्ता ने अपने शोध को क्षेत्र से कुछ केस स्टडीज पर आधारित किया। पेपर ने निष्कर्ष निकाला कि सोशल मीडिया ने बिना किसी संदेह के ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर को बदल दिया है। सोशल मीडिया ने किसानों को कृषि के मामले में कई मंच और अवसर प्रदान किए हैं। सोशल मीडिया के चलते किसान बिचौलियों के हस्तक्षेप के बिना अपनी फसल ऑनलाइन बेच रहे हैं। शोध ने सोशल मीडिया के कारण किसानों के स्वास्थ्य से जुड़ी कुछ सफलता की कहानियां सुनाईं। अध्ययन में पाया गया कि, हालांकि, मास मीडिया का प्रभाव धीमा है, लेकिन यह धीरे-धीरे और धीरे-धीरे किसानों के जीवन को प्रभावित कर रहा है।

दीनू वरकड़े, डॉ.(2020) भारतीजनजातीय ससकति सवय म एक समदध ससकति ह। निरकषरता, जीवन जीन का विशष ढग, समह की समानता, मौखिक परपरा, लोक साहितय, कला, ससकति नतय, धरम आदि विशषताओ क आधार पर यह जनजाति समह को पहचाना जाता ह। आज वरतमान समय म आधनिकीकरण, औदयोगिकरण, नगरीकरण, यातायात और सचार क साधनो का परयोग, वजञानिक परगति एव शिकषा क कारण मधयपरदश राजय की जनजाति समाज म सामाजिक-सासकतिक परिवरतन दखन को मिलती ह। ससकति की सजञा मानव क सीख हए वयवहार-परकारो को दी जाती ह। वस तो ससकति का परा सवरप ही ऐतिहासिक सदरभो म निरमित होता ह, कित उसक ऐस मलयो और वयवहार-परकारो को, जिनकी जड इतिहास म बहत गहरी ह, परपरा कहा जाता ह। जनजातियो का आरथिक जीवन एव मखय भोजन, सामाजिक सरचना, सथानीय शासन, जीवन चकर, विवाह ससकार, मतक ससकार, आसथा अनषठान व विशवास, तीज तयोहार, परमख वाघ यतर, नाटय सरवाग, वसतर विनयास, आभषण, धारमिक सगठन, लोक वयवहार, दव अरचना, कथाए, चितरकला मरति शिलप व परपराए, इस परकार स आदिवासी/जनजाति लोक ससकति जीवन क विकास करम की एक महतवपरण कडी ह। आदिवासी समाज क रीति रिवाज भी दिनचरया क ही अग ह वह अपनी परपराओ स समझौता कभी नही करता, इस अरथ म आदिवासियो बहल मधय परदश का बतल जिला आसथा का कदर ह और यही आसथा और विशवास इनह विशिषटता परदान करता ह।

डॉ. निशा मुधे-पवार (2013) जनजातीय समुदाय में विभिन्न मीडिया की पहुंच को समझने की तत्काल आवश्यकता है ताकि सरकारी नीतियों को उचित मीडिया के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से लागू किया जा सके जो जनजातीय समुदाय द्वारा आसानी से उपलब्ध, उपयोगी और स्वीकार किए जाते हैं। भारत के संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत 705 से अधिक अनुसूचित जनजातियां अधिसूचित हैं, जो देश के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में फैली हुई हैं। महाराष्ट्र में आदिवासी समुदायों की कुल संख्या 47 है और इसमें 10.1% आदिवासी आबादी शामिल है। इन आदिवासी समुदायों में अभी भी कुछ विशिष्ट विशेषताएं हैं जैसे कि बड़े पैमाने पर समुदाय के साथ संपर्क की शर्म, भौगोलिक अलगाव और पिछड़ापन। वर्तमान शोध पत्र नांदेड़ जिले के किनवट तालुका में गोंड समुदाय के बीच मीडिया एक्सपोजर को जानने का एक प्रयास है। गोंड समुदाय के

www.ignited.in

बीच मीडिया पहुंच के बारे में एक अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता ने प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए जवरला की ग्राम पंचायत और किनवट तालुका के आईटीडीपी (एकीकृत जनजातीय विकास परियोजना) कार्यालय का दौरा करके जवराला गांव के 50 उत्तरदाताओं का सर्वेक्षण किया।.

पद्धति

एक शोध पद्धति वैज्ञानिक, तार्किक, व्यवस्थित और आर्थिक रूप से प्रासंगिक तरीके से डेटा एकत्र करते समय उपयोग की जाने वाली कार्रवाई की एक व्यवस्थित योजना है। अनुसंधान पद्धति एक शोध समस्या को व्यवस्थित और वैज्ञानिक रूप से हल करने की एक विधा है। शोध पद्धति में, किसी समस्या को हल करने के लिए अपनाए गए विभिन्न चरणों का अध्ययन मुख्य रूप से तर्क और उनके चयन के पीछे के कारण के संदर्भ में किया जाता है। एक शोधकर्ता के लिए अनुसंधान विधियों के साथ-साथ शोध पद्धति का उचित ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। इसका तात्पर्य यह है कि शोधकर्ता को अपनी शोध समस्या की मांग के अनुसार अपनी शोध पद्धति को उचित रूप से डिजाइन करनाचाहिए। अनुसंधान पद्धति में अनुसरण की जाने वाली विधियों, चुने गए नमूने, उपकरण और तकनीकों को कुछ निष्कर्षों तक पहुंचने और बनाने और तार्किक निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए दर्शाया ।

अनुसंधान की विधियां

प्रस्तावित शोध के उद्देश्यों को न्यायोचित ठहराने के लिए शोधकर्ता को मिश्रित विधि अध्ययन डिजाइन को शामिल किया । मात्रात्मक भाग के लिए शोधकर्ता को साक्षात्कार अनुसूची और अध्ययन के गुणात्मक पहलू के लिए तैयार किया। शोध की मिश्रित विधि का तात्पर्य है कि एक शोध पद्धति में डेटा संग्रह के मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों तरीके शामिल किया।

अनुसन्धान रेखा - चित्र

यह प्रकृति में एक वर्णनात्मक अध्ययन है। साहित्य की गहन समीक्षा से पता चलेगा कि जनसंचार माध्यमों की पृष्ठभूमि में शहडोल जिले की सुहागपुर तहसील की गोंड जनजाति की जीवन शैली पर कुछ ही अध्ययन हुए हैं। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य मध्य प्रदेश के शहडोल जिले की सुहागपुर तहसील की गोंड जनजाति की जीवन शैली में जनसंचार माध्यमों के प्रभाव पर हुए। इसलिए, वर्तमान अध्ययन में मौजूदा ज्ञान में कुछ नया जोड़ने के लिए एक वर्णनात्मक शोध डिजाइन का गठन किया.

अध्ययन का कुल नमूना

कुल 200 उत्तरदाताओं का नमूना, प्रत्येक जिले से 100 नमूने, अर्थात मध्य प्रदेश के शहडोल जिले की सुहागपुर तहसील से 25 उत्तरदाताओं का एक नमूना एकत्र किया, एक गोंड परिवार को अनुसंधान के लिए मूल नमूना इकाई मानते हुए.

डेटा संग्रहण

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग किया जाएगा। द्वितीयक डेटा यह है कि डेटा पहले किसी अन्य एजेंसी या सरकारी संगठन द्वारा एकत्र किया जाएगा, लेकिन विश्लेषण किया जाएगा और किसी अन्य व्यक्ति या संगठन द्वारा अनुसंधान के उद्देश्य के लिए अपने स्वयं के उपयोग के लिए उपयोग किया । माध्यमिक डेटा को समाचार पत्रों में प्रकाशित किया जाएगा, जनगणना, पत्रिकाओं, विभिन्न राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में शोध पत्र, सरकारी रिकॉर्ड आदि का उपयोग अध्ययन के उद्देश्य के लिए किया। दूसरी ओर, प्राथमिक डेटा यह है कि शोधकर्ता द्वारा अध्ययन के उद्देश्य के लिए पहली बार डेटा एकत्र किया।

डेटा विश्लेषण

शोध में उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत विशेषताएं और जनसांख्यिकीय जानकारी बहुत आवश्यक हैं और अध्ययन की आवश्यकता के अनुसार विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रस्तुत शोध में 200 उत्तरदाताओं के विभिन्न व्यक्तिगत गुण एवं किसी विशेष उत्तर के प्रति उनकी प्रतिक्रिया को प्रस्तुत किया गया है।

उत्तरदाताओं की स्थानीयता

सर्वेक्षण अनुसंधान में उत्तरदाताओं की स्थानीयता प्रमुख निर्धारक कारकों में से एक है। शहरी क्षेत्रों के आसपास रहने वाले एक उत्तरदाता की बेहतर पहुंच और विभिन्न मीडिया संसाधनों तक पहुंच हो सकती है, एक उत्तरदाता की तुलना में जो शहर के जीवन से दूर के स्थानों में रह रहा है।.

तालिका 1: क्षेत्रवार उत्तरदाताओं का प्रतिशत वितरण

www.ignited.in

विवरण	प्रतिशत
ग्रामीण	87.0
शहरी	13.0
सभी	100.00 (200)

उपरोक्त तालिका और संबंधित आंकड़े उत्तरदाताओं के प्रतिशत को उनके संबंधित इलाके के रूप में खोजते हैं। मध्य प्रदेश के शाहडोल जिले की सुहागपुर तहसील से वर्तमान अध्ययन के लिए 13.0 प्रतिशत उत्तरदाता ग्रामीण और 87.0 प्रतिशत उत्तरदाता शहरी हैं। इस प्रकार अधिकांश गोंड उत्तरदाता नमूने के रूप में शोध कार्य के लिए ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्र से हैं।

तालिका 2: उत्तरदाताओं का आयु समूह

आयु समूह (वर्ष)	%
16-25	14.5
26-35	44.0
36-45	23.0
46-55	10.0
56-65	8.5
कुल	100.00 (200)

तालिका 3: उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति (प्रतिशत)

विवरण	%
विवाहित	81.50
अविवाहित	17.50
विधवा विधुर	1.00
सभी	100.00 (200)

सर्वेक्षण अनुसंधान में उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति के बारे में प्रश्न महत्वपूर्ण हैं। विवाहित उत्तरदाता अविवाहित या तलाकशुदा लोगों की तुलना में भिन्न अनुभव और प्रतिक्रिया दे सकते हैं। तालिका और इसके संबंधित आंकड़े दर्शाते हैं कि 85.5 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित हैं और केवल 17.5 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित हैं जबकि 1.0 प्रतिशत विधवा या विधुर हैं। हमारे पास सभी आयु समूहों के उत्तरदाता हैं। वर्तमान स्थिति दर्शाती है कि अधिकतर गोंडों की शादी कम उम्र में ही कर दी जाती है।

तालिका 4: उत्तरदाताओं की शिक्षा योग्यता

शैक्षणिक योग्यता	(%)
निरक्षर	10.00
प्राथमिक शिक्षित	33.50
मध्य शिक्षित	24.50
उच्च माध्यमिक	28.00
स्नातक	4.00
सभी	100.00 (200)

तालिका 5: निजी व्यवसाय वार उत्तरदाताओं की आय का हिस्सा

व्यवसाय	वार्षिक आय (प्रतिशत में)			
	50,000 के नीचे	50,000-1,00,000	1-2 लाख	2-3 लाख
पशुपालक/किसान/ग्रामीण कारीगर/मैनुअल श्रमिक/मनरेगा	87.5	69.2	0.0	0.0
स्व - रोजगार (व्यापार	1.9	24.6	0.0	0.0
निजी संस्था में नौकरी	0.0	0.0	21.1	0.0
एन ए	10.6	6.2	78.9	100.0

तालिका उन उत्तरदाताओं का अवलोकन देती है जो अपनी आय के संबंध में निजी व्यवसाय में हैं। उपरोक्त तालिका दर्शाती है कि बहुसंख्यक उत्तरदाता जो मवेशी चराने वाले/किसान/ग्रामीण कारीगर/वार्षिक श्रमिक/मनरेगा के रूप में काम कर रहे हैं, और स्वरोजगार/व्यवसाय आदि के रूप में भी काम कर रहे हैं, उनकी वार्षिक आय पचास हजार रुपये से कम है, या कुछ मामलों में यह के बीच है पचास हजार से एक लाख। निजी संस्था में कार्यरत उत्तरदाताओं की आय एक लाख से दो लाख के बीच है। इससे पता चलता है कि निजी संस्था में कार्यरत गोंडों की आय पशुपालक/किसान के रूप में कार्यरत गोंडों की तुलना में अधिक है।

निष्कर्ष

मीडिया ने निस्संदेह समाज की तस्वीर बदल दी है। अब, लोग दूर-दराज के क्षेत्रों में भी एक दूसरे से अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं। संचार के मामले में उनकी पहुंच नाटकीय रूप से बढ़ी है और अभी भी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। अब, अनपढ़ लोगों के पास भी रेडियो, टेलीविजन और स्मार्ट फोन आदि जैसे मीडिया प्लेटफॉर्म तक पहुंच है। इसने लोगों की विशेष रूप से गृहिणियों, आदिवासियों और अधीनस्थों की मानसिकता को निर्णायक रूप से बदल

www.ignited.in

दिया है। अब, वे मास मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्मों की खोज किए बिना अपना समय नहीं बिताते हैं। वे टेलीविजन देखते हैं और रेडियो सुनते हैं और इस प्रकार सक्रिय रूप से अपना मनोरंजन करने के साथ-साथ बहुत सी नई और अलग चीजें सीख सकते हैं। मीडिया ने देश के ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में संचार की बाधाओं को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जनसंचार माध्यमों ने आदिवासी और ग्रामीण लोगों के जीवन को काफी हद तक प्रभावित किया है। विभिन्न जनजातीय समुदायों के बीच जनसंचार माध्यमों का प्रभाव विभिन्न अन्य सामाजिक और आर्थिक कारकों के कारण भिन्न हो सकता है। शोधकर्ता ने पाया कि जनजातीय समुदाय पर जनसंचार माध्यमों का प्रभाव बहुत सकारात्मक है। वर्तमान अध्ययन में संचार और विकास के मामले में गोंड आदिवासी समुदाय के बीच एक बहुत ही सकारात्मक बदलाव देखा गया। इसने महिला शिक्षा, सांस्कृतिक समावेश, स्वच्छता, परिवार नियोजन, राजनीतिक जागरूकता, पंचायती राज, रोजगार, संवैधानिक और लोकतांत्रिक अधिकार, सरकार के विस्तार जैसे जीवन के सभी क्षेत्रों में गोंडों को बहुत प्रभावित किया है।

संदर्भ

1. श्वेता दुबे (2013) "मध्य प्रदेश, भारत के शहडोल जिले के गोंड जनजाति में अल्फा थैलेसीमिया टाइप II की व्यापकता" पर। जैव प्रौद्योगिकी विभाग, माता गुजरी महिला महाविद्यालय (स्वायत्त), जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत। ई-आईएसएसएन:2320-3528 पी-आईएसएसएन:2347-2286
2. सूरी, के. (2014)। जम्मू और कश्मीर में गोंड और बक्करवाल जनजातियों की मौसमी प्रवासी प्रथाओं पर सशस्त्र संघर्ष का प्रभाव। आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस (आईओएसआर-जेएचएसएस), 19(2)।
3. गुल, एस.बी.ए. (2016)। जम्मू और कश्मीर में गोंड और बकरवाल महिलाओं के स्वास्थ्य का आकलन और समझ। जर्नल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट एंड सोशल साइंसेज रिसर्च, 3(3), 37-43
4. साहनी, बी (2015)। 19वीं सदी के हिमाचल प्रदेश में गोंड का प्रवास और बसावट पैटर्न। इंजीनियरिंग, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान अध्ययन के वैश्विक जर्नल-आईएसएसएन-2394-3084, 1(04)
5. कौंडल, वी. (2012)। घुमंतू गोंड के बीच गरीबी- जम्मू और कश्मीर और हिमाचल प्रदेश का एक केस स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मार्केटिंग, फाइनेंशियल सर्विसेज एंड मैनेजमेंट रिसर्च, 1(8),2277-3622
6. सोफी, यू.जे. (2013)। जनजातीय विकास का विरोधाभास: जम्मू और कश्मीर (भारत) के गुर्जरों और बकरवालों का एक मामला। Jsswnetपर उपलब्ध है। कॉम,
7. शर्मा, एस.आर. (2016)। आदिवासी युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ पीस, एजुकेशन एंड डेवलपमेंट, 4(2), 59-63।
8. शर्मा, वी। (2017) जम्मू और कश्मीर के सांबा जिले में विजयपुर ब्लॉक के आदिवासी गोंड बच्चों की शैक्षिक स्थिति का एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल फॉर इनोवेटिव रिसर्च इन मल्टीडिसिप्लिनरी फील्ड, 3 (7)।
9. नज़र, एम.आर., और हसबुल्लाह, ए.एच. (2010)। एक शैक्षिक मीडिया के रूप में रेडियो: कृषि विकास पर प्रभाव। द जर्नल ऑफ़ द साउथ ईस्ट एशिया रिसर्च सेंटर, 2, 13-20।
10. बंसल, ई. (2015)। ग्रामीण भारत पर सोशल मीडिया का प्रभाव। रिपोर्ट पुनर्प्राप्त, फरवरी, 14, 2016।
11. वरकड, द., और भारती, ड. (2020) गोंड जाति में संचार का सम्प्रेषणीय अध्ययन (मध्यप्र के बैतूल के विशेष अंक में)
12. डॉ. निशा मुदे-पवार (2013) "महाराष्ट्र में गोंड ट्राइबल कम्युनिटी के बीच मीडिया एक्सपोजर" * कर्नाटक यूनिवर्सिटी जर्नल ऑफ सोशल साइंस (2013) वॉल्यूम। 37, आईएसएसएन- 0075-5176 पीपी- 32-38

Corresponding Author

Ajay Sahu*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

www.ignited.in